अबिनासी दुलहा कब मिलिहो भगतन के रछपाल

अबिनासी दुलहा कब मिलिहो भगतन के रछपाल

जल उपजी जल ही सो नेहा, रटत पियास पियास ,
मैं ठाढ़ी बिरहन मग जोहूँ , प्रियतम तुमरी आस

छोड़े नेह गेह, लगि तुमसों , भयी चरण लवलीन ,
तालामेलि होत घट भीतर , जैसे जल बिन मीन

दिवस नभूख ,रैननहिं निदिया ,घरआँगन न सुहावे ,
सेजरिया बैरन भइ हमको , जाबत रेन बिहावे

हमतो तुमरी दासी सजना, तुम हमरे भरतार ,
दीनदयाल दया करि आवो, समरथ सिरजन हार

कह कबीर सुन जोगिनी, तो तन में मन हि मिलाय.
तुम्हरी प्रीति के कारने, हो बहुरि मिलिहंइ आय

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/15293/title/abinaasi-dulha-kab-miliho-bhgtan-ke-rashpaal

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |